## १२५

वागाम्भृणी। आत्मा। त्रिष्टुप्, २ जगती

**अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।**
**अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥ १०.१२५.०१**

अदितिर्मही वा अखण्डप्रकृतिः। सर्वजगदाधारभूता। समस्तजगतां मूलशक्तिर्मूलप्रकृतिर्वा। सैव हृदि सर्वभावनानां भरणप्रकरणे भारतीति कथ्यते। सैवान्तर्गता वाक्। तस्या वाक्यमिदं सूक्तम्। अहम्। रुद्रेभिः- वेगाधिदैवतैः। वसुभिः- सम्पद्भूतैः। चरामि। आदित्यैः- अखण्डप्रकृतिजैः। उत- अपि च। विश्वदेवैः- सर्वदेवताभिः। चरामि। अहम्। मित्रावरुणा- स्नेहाधिदैवतम् ऋताधिदैवतम्। बिभर्मि- धारयामि। अहम्। इन्द्राग्नी- ईशनाधिदैवतं क्रत्वधिदैवतम्। अहम्। उभा- उभौ। अश्विना- अश्विनौ प्राणेशौ। बिभर्मि ॥१॥

**अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।**
**अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३ यजमानाय सुन्वते॥ १०.१२५.०२**

अहम्। आहनसम्- वृत्रहन्तारम्। सोमम्- रसाधिदैवतम्। बिभर्मि- धारयामि। त्वष्टारम्- शिल्पाधिदैवतम्। उत- अपि च। पूषणम्- पोषकमात्मानं सूर्यम्। भगम्- सौभाग्याधिदैवतमात्मानं सूर्यम्। बिभर्मि। अहम्। सुप्राव्याय- तर्पयित्रे। यजमानाय। सुन्वते- रसनिष्पादकाय। हविष्मते- हव्ययुक्तायोपासकाय। द्रविणम्- सम्पदम्। दधामि- धारयामि ॥२॥

**अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।**
**तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्॥ १०.१२५.०३**

अहम्। राष्ट्री- राष्ट्रदेवता भारती भारतमाता। वसूनाम्- प्रकृतिसम्पदाम्। सङ्गमनी- सङ्गमयित्री। यज्ञियानाम्- पूजार्हाणां देवानाम्। प्रथमा- मुख्या। चिकितुषी- विदुषी। भूरिस्थात्राम्- बहुस्थानेषु स्थिताम्। भूयावेशयन्तीम्- बहुषु प्रविष्टाम्। ताम्- तादृशीम्। मा- माम्। देवाः- देवताः। पुरुत्रा- बहुषु देशेषु। व्यदधुः- समानतया स्थापितवन्तः ॥३॥



Dr. Rangani

**मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।**

**अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥ १०.१२५.०४**

यः। विपश्यति- विशेषेण पश्यति। यः। प्राणिति- श्वसिति। यः। ईम्- एतत्। उक्तम्। शृणोति। सः। मया। अन्नम्। अत्ति- भक्षयति। माम्। अमन्तवः- अजानन्तः। ते। उप क्षियन्ति- उपक्षीणं गच्छन्ति। श्रुत- श्रुतियुक्त। श्रुधि- शृणु। ते- तव। श्रद्धिवम्- श्रद्धार्हं वाक्यम्। वदामि- ब्रूमि ॥४॥

**अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।**

**यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥ १०.१२५.०५**

देवेभिः- देवैः। उत- अपि च। मानुषेभिः- मनुष्यैः। जुष्टम्- सेवितम्। इदम्- एतद्वाक्यम्। अहमेव। स्वयम्। वदामि- ब्रवीमि। यम्। कामये- अधिकारिणमिति चिन्तये। तं तम्। उग्रम्- अध्यात्मसाधने तीव्रम्। करोमि। तम्। ब्रह्माणम्- मन्त्रविदम्। तम्। ऋषिम्- मन्त्रदर्शिनम्। तम्। सुमेधाम्- मन्त्रधारणसमर्थम्। करोमि ॥५॥

**अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।**

**अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश॥ १०.१२५.०६**

ब्रह्मद्विषे- ब्रह्मद्वेषिणम्। शरवे- हिंसकम्। हन्तवे- हन्तुम्। अहम्। रुद्राय- वेगाधिदैवताय। धनुः- चापमायुधम्। आ तनोमि- करोमि। अहम्। जनाय- उपासकजनाय। समदम्- रसम्। कृणोमि- करोमि। अहम्। द्यावापृथिवी- द्यावापृथिव्यौ। आ विवेश- प्रविवेश ॥६॥

**अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।**

**ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि॥ १०.१२५.०७**

अस्य- एतस्य जगतः। मूर्धन्- शिरसि। अहम्। पितरम्- दिवम्। सुवे- सृजामि। मम। योनिः- प्रतिष्ठा। अप्स्वन्तः समुद्रे- मूलधाराशक्तिप्रवाहे। आपो आधारशक्तिधाराः। अदितिराधारनिबिडम्।

Dr. Rangaji

इदमेवानयोरन्तरम्। ततः- पश्चात्। विश्वा- सर्वाणि। भुवनानि। अनु वि तिष्ठे- व्याप्य तिष्ठामि। अमूम्- इमाम्। द्याम्- दिवम्। वर्ष्मणा- समवायिकारणेन मम देहेन। उप स्पृशामि ॥७॥

**अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।**

**परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव॥ १०.१२५.०८**

विश्वा- सर्वेषाम्। भुवना- लोकानाम्। आरभमाणा- कारणभूता। अहमेव। वात इव- प्राण इव। प्र वामि- प्रवर्ते। परो दिवा- आकाशस्य परस्तात्। एना- अस्याः। पृथिव्याः- भूम्याः। परः- परस्तात्। महिना- महिम्ना। एतावती- एतादृशी। सं बभूव- समभवम् ॥८॥

Dr. Rangarji